ओमशांति। मीठे–2 सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। अब इस समय सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। याद करते हैं। अब भारत बहुत दुःखी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हैं। दुनिया वाले नहीं जानते। बाप आते हैं पतितों को पावन करने व दुखियों को दुःख से लिबरेट करने, दुःख हर सुख देने लिए। बच्चे जान गए हैं, वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है। स्वयं बैठ बतलाते हैं– मैं साधारण तन में प्रवेश कर फिर तुम बच्चों को सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ सुनाता हूँ। सृष्टि एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर– दो चीज़ तो नहीं कहेंगे। है एक ही, सिर्फ नए से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है, नई से अब पुरानी हुई है। नई कब थी, यह फिर कोई भी बता न सकते। बाप आकर समझाते हैं– बच्चे, जब नई दुनिया थी तो भारत नया था, सतयुग कहा जाता था। वह ही भारत अब पुराना बना है। इसको पुरानी ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यू वर्ल्ड ही फिर ओल्ड बनी है। फिर उनको नया ज़रूर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है। अच्छा, उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह ल०ना० थे। आदि सनातन देवी–देवताएँ मालिक थे, यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप कहते हैं– अब निरंतर यही याद करो, बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आया हुआ है। महिमा सारी उस एक की है। इनकी महिमा कुछ नहीं है। यह ब्रह्मा–सरस्वती तो तुच्छ थे। इस समय सब तुच्छ बुद्धि हैं, कुछ नहीं समझते; इसलिए मैं आता हूँ, तब तो गीत भी बनाया हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हर एक का पार्ट तो अपना–2 है। बाप बार–2 कहते हैं, देह–अभिमान छोड़ आत्मा–अभिमानी बनो और ऑरगन्स से शिक्षा धारण करो। भल इस बाबा को चलते–फिरते देखते हो; परन्तु याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो, शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है (नहीं)। भल इनका रूप इन आँखों से दिखाई पड़ता है, तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी है। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो, इसमें शिवबाबा है। वह इस द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है, सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। यह तो कोई काम का न था। कब भी जिस्म को याद न करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है तो सर्वव्यापी का ज्ञान ठहर ही न सका(सके)। बच्चे याद करते हैं– फिर से आकर ज्ञान–योग सिखलाओ। प०पि०प० के सिवाय तो कोई राज़ सिखाय न सके। बच्चों की बुद्धि में है, वह ही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं। फिर यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाती है। वहाँ दरकार ही नहीं। राजधानी स्थापन हो गई, सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति होने लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्तिमार्ग की बातें। मनुष्य जप–तप, दान–पुण्य आदि जो कुछ करते हैं, सब भक्तिमार्ग की बातें हैं। इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता। आत्मा के पर टूट गए हैं, पत्थर बन गए हैं। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े। बाप कहते हैं, अब कितने मनुष्य हैं। सरसों मिसल संसार बड़ा हुआ है। सब (धा)नी खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया, वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे। यहाँ तो इतने मनुष्य हैं, जो खाने लिए भी नहीं मिलता। पुरानी कलराठी जमीन है, फिर नई हो जावेगी। वहाँ है ही एवरीथिंग न्यू। नाम ही कितना मीठा है– हैविन, बहिष्त, देवताओं की नई दुनिया। पुराने घर को तोड़ नए में बैठने की दिल होती है न! अब है नई दुनिया स्वर्ग में जाने की बात। इस पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं। बच्चे कहते हैं, हार पहने; पर इनको हार पहनेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जाएगा। शिवबाबा कहते हैं, हमको हार की दरकार नहीं है। तुम ही

पूज्य बनते हो। पुजारी भी बनते हो। आपे ही पूज्य, आप ही पुजारी बनते हो तो अपनी ही चित्र की पूजा करने लगते हो। बाबा कहते– मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूलों आदि की दरकार है। मैं क्यों यह पहनूँ? इसलिए कब फूल आदि लेते नहीं हैं। तुम पूज्य बनते हो, फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बिलवेड, ओबीडियेंट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े–2 रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं– मिन्टो कर्जन। अपन को लॉर्ड कभी नहीं लिखेंगे। यहाँ तो लिखते– श्री–2 ल०ना०, श्री फलाना। एकदम 'श्री' अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं, अब इस शरीर को याद न करो। अपन को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट होगा। सोने में ही खाद पड़ती है। तो आत्मा को कब निर्लेप न समझना चाहिए। यह ज्ञान अभी तुमको है। सतयुग में तो 21 जन्म लिए प्रालब्ध पाय लेते हो। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए; परन्तु बच्चे घड़ी–2 भूल जाते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। इसको सद्गति नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं, पहले सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं। यह ब्रह्मा,विष्णु,शंकर भी अपना पार्ट बजाय फिर वापिस चले जाएँगे। निर्वाणधाम ऊँच ते ऊँच धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊँच है। बाप, एक भगवान को सभी भक्त याद करते हैं; परन्तु तमोप्रधान बन गए हैं तो बाप को भूल ठिक्कर–भित्तर सबकी पूजा करते रहते हैं। अपन जानते हैं, जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है, समझो, बीच में कोई जीव आदि उड़ता है तो वही शूटिंग घड़ी–2 होती रहेगी। पतंगा उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर–2 रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा का सेकेण्ड–2 रिपीट होता जाता, शूट होता रहता है। है यह बना–बनाया ड्रामा। तुम एक्टर्स हो, सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक–2 सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं, पत्ता–2 भगवान के हुक्म पर चलता है। नहीं, यह सब ड्रामा की नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं। संगमयुग पर काँटा भी लगा हुआ है। कलियुग अंत, सतयुग आदि का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह न होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे ही समझो, हमको बाप पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेन्ट्स हैं। भगवानुवाच्य, मैं तुमको सो राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी इन ल०ना० को पूजते हैं। तो उन्हों (को) पूज्य बनाने वाला मैं हूँ न। जो पूज्य थे वह अब पुजारी हो गए हैं। तुम बच्चे समझ गए हो, हम सो पूज्य थे, फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते। बाबा कहते– न मैं पूज्य, न पुजारी हूँ; इसलिए न मैं फूल पहनता हूँ, न पहनाने पड़ते। तो हम क्यों फूलों को इन्कार करें! तुम भी इन्कार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार उनको हक नहीं है। जिनकी आत्मा और शरीर प्युअर है वह हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में हैं ही खुशबूदार फूल। खश.... के लिए होते हैं। पहनने लिए भी होते हैं। बाप कहते हैं– अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार (बन)ते हो। नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, करते हैं और करने लग पड़ेंगे, नम्बरवार तो हैं। बुद्धि कहती है, फलाना बच्चा बहुत अच्छा सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है– सेठ बनते हैं, भागेदार बनते हैं, मैनेजर बनते हैं, नीचे वालों को भी लिफ्ट मिलती है। यह भी ऐसे है। तुम बच्चों को मात–पिता पर जीत पानी है। तुम वण्डर खाती हो– मात–पिता से आगे कैसे जा सकते! बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं तख्तनशीन बनाने; इसलिए कहते हैं– हमारे तख्त पर जीत पहनना। एक/दो पर जीत पहनते हैं न! पुरुषार्थ इतना करो जो नर से नारायण बनो। एम–ऑब्जेक्ट मुख्य है ही एक। फिर कहते हैं, किंगडम स्थापन

हो रही है। फिर उसमें वैराइटी पद हैं। माया को जीतने का पूरा पुरुषार्थ करो। भल बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ; परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्तिमार्ग में कहते थे न– प्रभु! यह सब कुछ आपका दिया हुआ, आपकी अमानत आपने ले ली। अच्छा, फिर रोने की बात ही नहीं; परन्तु यह तो है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथाएँ बहुत सुनाते हैं। मोहजीत राजा की भी सुनाते हैं। फिर कोई दुःख फील नहीं होता है– एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। वहाँ कब कोई बीमारी आदि होती नहीं। एवरहेल्दी, निरोगी काया रहती है 21 जन्मों लिए। बच्चों को सब साक्षात्कार होते हैं। वहाँ की रसम–रिवाज़ कैसे चलती है, क्या ड्रेस पहनते हैं, शादी आदि कैसे होती है, सब बच्चों को साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उसी समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन–प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत आती जाती है जोर से। यह भी सब ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। वण्डर है न! प० (परम–आत्मा) में भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं, भक्तिमार्ग में ऊपर बैठे मैं कितना काम करता हूँ। नीचे तो कला में एक ही बार आता हूँ। बहुत निराकार के पुजारी भी होते हैं; परन्तु निराकार प०पि०प० कैसे आकर पढ़ाते हैं, यह बात गुम कर दी है। गीता में श्री कृष्ण का नाम डाल दिया तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही आ करके सहज योग सिखलाया और दुनिया को बदलाया। दुनिया बदलती रहती है, युग फिरते रहते हैं– इस ड्रामा के चक्कर को अभी तुम समझ गए हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी–देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई हैं। तो बाप समझाते हैं, हमेशा ऐसे समझो– हम शिवबाबा के हैं, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा इस ब्रह्मा तन द्वारा हमको शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन! स(दैव) फादर भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। कैसे बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं! तो ज़रूर कहेंगे, हमारा यह फादर टीचर है; परन्तु वह फादर गुरु भी हो, ऐसे नहीं होता है। टीचर हो सकता है, फादर को गुरु कब नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर भी टीचर था। पढ़ाते थे। हम भी पढ़ते थे। वह है हद का फादर टीचर, यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपन को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो भाग्य! गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है! तो कितना मीठा बाबा है। मीठी चीज़ को याद किया जाता है; जैसे आशूक–माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता। बस, एक/दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप के साथ। आत्मा कहती है– बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है! इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर हमको कितना ऊँच बनाते हैं! गायन भी है– मनुष्य से देवता किये करत न लागे वार। सेकेण्ड में वैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम–ऑब्जेक्ट। इसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। नानक ने भी कहा न– मूत पलीती कपड़ धोय। लक्ष्य सोप है न! बाबा कहते हैं– मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा! आत्मा, जो बिल्कुल काली हो गई है, उनको योगबल से कितना स्वच्छ बनाता हूँ। तो इनको (दादा) कब भी याद न करना पड़ता। यह सारा शिवबाबा का है। उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है। आत्माओं को कहते हैं– तुमको इन आँखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है; परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इन द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बना रहा। मात–पिता, बापदादा का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार व गुडमॉर्निंग। ॐ